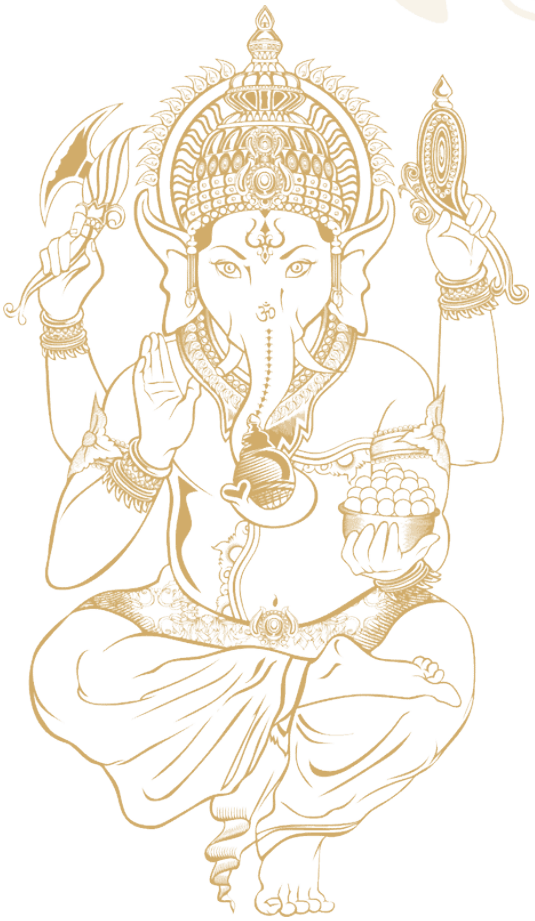

V

G

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121909909

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
04/11/2001	जन्म तिथि	16/04/2002
रविवार	दिन	मंगलवार
घंटे 17:45:00	जन्म समय	08:19:00 घंटे
घटी 27:53:45	जन्म समय(घटी)	05:59:16 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:35:29	सूर्योदय	05:55:17
17:33:47	सूर्यास्त	18:47:14
23:52:39	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:02

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 4वर्ष 9मा 21दि		22:53:00	मेष	लग्न	वृष	13:56:34	सूर्य 0वर्ष 4मा 17दि	
गुरु		18:15:58	तुला	सूर्य	मेष	02:03:42	राहु	
26/08/2024		27:30:21	वृष	चंद्र	वृष	09:09:07	02/09/2019	
26/08/2040		11:29:59	मक	मंगल	वृष	07:44:33	02/09/2037	
गुरु	15/10/2026	01:13:29	तुला	बुध	मेष	11:41:52	राहु	16/05/2022
शनि	27/04/2029	21:48:30	मिथु व	गुरु	मिथु	14:53:10	गुरु	08/10/2024
बुध	03/08/2031	01:03:18	तुला	शुक्र	मेष	24:21:13	शनि	15/08/2027
केतु	09/07/2032	19:48:10	वृष व	शनि	वृष	17:58:48	बुध	04/03/2030
शुक्र	10/03/2035	04:01:24	मिथु व	राहु व	वृष	25:04:36	केतु	22/03/2031
सूर्य	27/12/2035	04:01:24	धनु व	केतु व	वृश्चि	25:04:36	शुक्र	22/03/2034
चन्द्र	27/04/2037	27:02:27	मक	हर्ष	कुंभ	04:02:30	सूर्य	14/02/2035
मंगल	03/04/2038	12:12:02	मक	नेप	मक	16:53:33	चन्द्र	14/08/2036
राहु	26/08/2040	20:01:07	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	23:33:21	मंगल	02/09/2037

लग्न-चलित

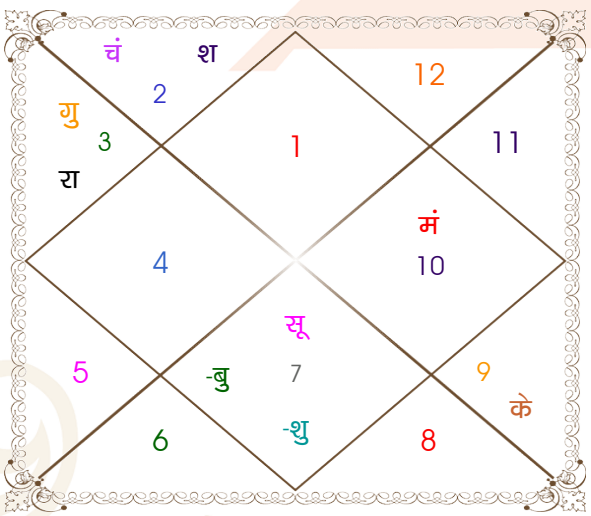

लग्न-चलित

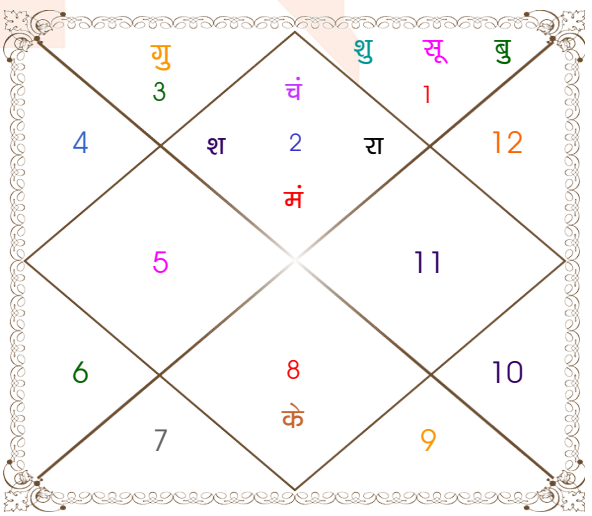

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	मेष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.50		

V का वर्ग मृग है तथा G का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूV मिलान के अनुसार V और G का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

V मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

G मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु G कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु V कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

V तथा G में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूV एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।